लघुशोध परियोजना का सारांश

'धर्मशास्त्रीय सोलह संस्कारों में ज्योतिष–अवधारणा'

लघु शोध परियोजना की प्रस्तावित रूपरेखानुसार अन्तिम वर्ष की समयावधि में कार्य को पूर्ण करने हेतु विभिन्न ग्रंथागारों, पुस्तकालयों तथा अकादमियों में जाकर ग्रंथों से विषय संबंधि अद्युनातन सामग्री का संकलन करके सम्पूर्ण शोधकार्य पूर्ण कर लिया है। लघु शोध का विषय **'धर्मशास्त्रीय सोलह संस्कारों में ज्योतिष–अवधारणा'** को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिसके प्रथम अध्याय में धर्मशास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र का सामान्य परिचय, द्वितीय अध्याय में प्राग्जन्म संस्कारों में ज्योतिष अवधारणा, तृतीय अध्याय में शैशव कालिक संस्कारों में ज्योतिष अवधारणा, चतुर्थ अध्याय में शैक्षणिक संस्कारों में ज्योतिष अवधारणा, पंचम अध्याय में विवाह एवं विवाहेत्तर संस्कारों में ज्योतिष अवधारणा है।

प्राचीन भारतीय ऋषि–मनीषियों ने व्यक्तित्व विकास तथा सामाजिक जीवन की सार्थकता के लिए संस्कारों को प्रतिपादित किया। धर्मशास्त्र विहित संस्कार जन्म के पूर्व से ही मानव के मनोविकारों को नष्ट करके उसमें पवित्रता का समावेश करते हैं। संसार में जितनी वस्तुएँ विद्यमान हैं, वे सब प्राकृतिक हैं। जिस प्रकार सभी वस्तुओं को अपने अनुरूप बनाकर प्रयोग में लाया जाता है, उसी प्रकार संस्कारों के द्वारा मनुष्यों में शुद्धता का समावेश करके दोष दूर किये जाते हैं। महर्षि पराशर ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि जिस प्रकार कोई चित्र सुन्दर रंगों के संयोजन से धीरे–धीरे अपने सौन्दर्य को उद्घाटित करता है, उसी प्रकार नियमपूर्वक किए गए विविध संस्कारों से व्यक्ति में ब्रह्मतेज प्रस्फुटित होता है– चित्रकर्म यथाऽनेकैरङ्गैरुन्मील्यते शनैः। ब्राह्मण्यमपि तद्वद्धि संस्कारैर्मन्त्रपूर्वकैः।

सम्प्रति सर्वाधिक लोकप्रिय संस्कार सोलह है– गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह एवं अन्त्येष्टि। इनके माध्यम से धर्मज्ञों ने यह सुनिश्चित कर दिया कि धर्मप्रधान भारत में व्यक्ति सुसंस्कृत व परिष्कृत हो जाता है, जिससे प्रेरित होकर वह समाज को सुसंस्कृत बनाने में सहयोग प्रदान करता रहता है।

संस्कारों के सम्पादन में कालनिर्णय का सर्वाधिक महत्त्व होता है। कौन सा संस्कार कब और कैसे करना चाहिए अर्थात् किस संस्कार के लिए कौन सा काल उचित होगा और कौन सा नहीं? इस परिस्थिति का ज्ञान केवल ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से ही

जाना जा सकता है। प्राचीन समय से ही काल का सूक्ष्म से सूक्ष्म विभाजन होता आया है। गुणधर्मों (जिस मुहूर्तशास्त्र की भाषा में शुभाशुभत्व कहा जाता है) की जानकारी हेतु काल के अवयवों का विभाजन किया गया है। जैसे शरीर में अनेक अवयव होने पर भी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक, जिह्वा एवं त्वचा), पाँच कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, वाणी, लिङ्ग व गुदा) एवं मन– इन ग्यारह अवयवों को मुख्य माना गया है, ठीक उसी प्रकार काल के भी ग्यारह अवयव प्रमुख माने गये हैं– 1. वर्ष 2. अयन 3. ऋतु 4. मास 5. पक्ष 6. वार 7. तिथि 8. नक्षत्र 9. योग 10. करण एवं 11.लग्न। शरीर के ग्यारह अवयवों में भी जैसे पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं मन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, ठीक उसी प्रकार शुभमुहूर्त का निर्णय करने में पंचांग (वार, तिथि, नक्षत्र, योग एवं करण) और लग्न– ये छः अवयव निर्णायक होते हैं। कालचक्र के सभी अंगों की शुद्धता का ही शुभमुहूर्त या विहितकाल कहा है, जो कार्य एवं कर्त्ता के अनुरुप प्रत्येक का समय ज्योतिष शास्त्र निर्धारण करता है।

भारतीय धर्मशास्त्रकारों ने सोलह संस्कारों के द्वारा मानव के व्यक्तित्व को परिष्कृत करके सामाजिक संतुलन बनाये रखने की ओर प्रेरित किया। प्राचीन भारतीय विद्वान् ज्योतिष और नक्षत्र विद्या आदि से पूर्णतया परिचित थे। जब वे सूर्य–चन्द्रमा के मार्ग निश्चित कर सकते थे तो उन्हें यह भी ज्ञात रहा होगा कि विविध तिथि, नक्षत्र आदि में सोलह संस्कार सम्पन्न करना शुभ होता है। धर्मशास्त्रीय ज्ञान आस्था एवं विश्वास की पृष्ठभूमि पर आधारित है और ज्योतिष विज्ञान एक सांख्यिकीय अध्ययन है। प्रस्तुत अध्ययन सांख्यिकी के सिद्धान्तों की परिकीया में लागू होगा अर्थात् निष्कर्ष सदैव प्रायिकता के शब्दों में दिया जायेगा। अतः अपवाद होना भी असंभव नहीं होगा। अध्ययन का अनुसरण किया जाये तो उचित समय का चयन करके अपेक्षित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं अर्थात् इंगित तिथि, मास, राशि, वार, नक्षत्र आदि पर केन्द्रित होकर कार्य संपन्न करे तो अपेक्षानुसार परिणाम की प्राप्ति की जा सकती है। इससे निश्चित रूप से भारतीय समाज में होने वाली सामाजिक विषमता को दूर किया जा सकता है, जो कि वर्तमान में एक गम्भीर समस्या बनी हुई है। यदि संस्कारों को ज्योतिषीय सिद्धान्तों के साथ सम्पादित किया जाये तो वर्तमान काल में समाज के अन्तःकरण में व्याप्त दूषित विचारों की शुद्धि के साथ–साथ उसको एक नई दिशा मिल सकती है।

(डॉ. हरकेश बैरवा)
Principal Investigator